Date: - 30/05 /2020.
Day: - Saturday, Time: - 10:30 to 11:20.
Class:- B.Ed. session (2019 21) 1st year. Subject: - contemporary India and Education. Paper:-2 Topic:-

समाजीकरण में प्रमुख अभिकरण/ कारक (Main Agencies/Factors Of Socialization) :

बालक का समाजीकरण करने वाले तत्व :

१. परिवार
२. पड़ोस
३. समुदाय
४. खेलकूद
५. नातेदारीसमूह
६. आर्थिकस्तर
७. विद्यालय
८. जातिसमूह
९. आयुसमूह
१०. अन्यप्राथमिकसमूह

संस्कृति (CULTURE)

प्रत्येक बालक का जन्म दोहरी विरासत के साथ होता है: जैवीकीय और सांस्कृतिक। अपनी जैविक विरासत में उसे अपनी शारीरिक विशेषताएं मानसिक क्षमताएं और आधारभूत आवश्यकताएं प्राप्त होती है। उसे अपनी सांस्कृतिक विरासत समाज से प्राप्त होती हैं जिसमें उसका जन्म और पालन-पोषण होता है। बालक की शिक्षा में उसकी सांस्कृतिक विरासत का उतना ही महत्व होता है। जितना कि उसकी जैवीकीय विरासत का। इस पर प्रकाश डालते हुए वेरको व अन्य ने लिखा है : " यद्यपि समाजशास्त्रियों की खोजों ने सिद्ध कर दिया है कि संस्कृति जन्मजात ना होकर सीखी जाती है फिर भी इसके सीखने को इतना अधिक महत्व दिया जाता है कि इसकी अवहेलना नहीं की जा सकती"

संस्कृति का अर्थ एवं परिभाषा (Meaning and Definition Of Culture) :

Culture शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के ***cultra*** शब्द से हुई है। जिसका अर्थ है कर्षण खेती, संस्कृति, शिष्टता तथा तहजीब। संस्कृति शब्द संस्कार शब्द का वंशज है जिसका अभिप्राय शुद्ध करने या सुधारने से है। संस्कार मानव निर्मित व्यवहार की विधियां है। जिसमें मनुष्य का समाज के प्रति अधिक जागरूक होने का प्रमाण मिलता है।

परिभाषा (Definition):

टायलर (Tylor) के अनुसार ***" संस्कृति वह जटिल पूर्णता है जिसमें ज्ञान, विश्वास कला, नैतिकता, नियम, रिवाज और समाज के सदस्य के रूप में मनुष्य द्वारा अर्जित की जाने वाली अन्य योग्यताएं और आदतें सम्मिलित है"***

सदरलैण्ड व वुडवर्ड ने संस्कृति और सामाजिक विरासत को पर्यायवाची माना है और लिखा है कि " संस्कृति में कोई भी बात आ सकती है जिसे एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित किया जा सकता है। किसी भी राष्ट्र की संस्कृति उसकी सामाजिक विरासत है।"

संस्कृति की विशेषताएं (Features or Characterisitics of Culture):

संस्कृति की विशेषताएं बहुत व्यापक हैं उनमें से कुछ निम्नलिखित हैं :

१. **ग्रहण करना :** संस्कृति ग्रहण की जाती है। मानव अपने पूर्वजों द्वारा अर्जित संस्कृति के साथ दूसरी संस्कृति को ग्रहण कर सकता है। अंततः हम कह सकते हैं संस्कृति सर्वग्राही है।

२. **सामाजिक विरासत :** संस्कृति सामाजिक विरासत का वह लक्षण है जो हमने अपने पूर्वजों से सीखा है। मनुष्य को सामाजिक विरासत के आदर्शों का अनुसरण करना होता है।

३. **संस्कृति सीखे हुवे व्यवहार का प्रतिमान है :** संस्कृति को समाज में आकर ही सीखा जाता है क्योंकि संस्कृति कोई जन्म-जात गुण नहीं है।

४. **संस्कृति में स्थानांतरित होने का गुण होता है :** संस्कृति को सामाजिक विरासत भी कहा जाता है क्योंकि संस्कृति में सीखे जाने का ही नहीं बल्कि हस्तांतरित होने का गुण विद्यमान होता है। संस्कृति को एक पीढ़ी अपनी अगली पीढ़ी को हस्तांतरित करती चलती है।

५. **संस्कृति परिवर्तनशील होती है :** हस्तांतरण के कारण परिवर्तन स्वाभाविक रूप से होता है क्योंकि प्रत्येक पीढ़ी इसमें अपनी सुविधा एवं परिस्थितियों के अनुसार परिवर्तन करती है। इसलिए इसमें निरंतर चलने वाली प्रक्रिया में परिवर्तन आता है। अतः हम कह सकते हैं कि संस्कृति निरंतर चलने वाली परिवर्तनशील प्रक्रिया है।

६. **संस्कृति सार्वभौमिक, सामाजिक और विशिष्ट होती है:** संस्कृति का निर्माण किसी एक व्यक्ति के द्वारा नहीं किया जा सकता। इसका निर्माण तो समाज के अंतर्गत होने वाली अंतःक्रिया से ही संपन्न अथवा संभव है। अर्थात संस्कृति किसी एक व्यक्ति पर निर्भर ना होकर पूरे समाज पर निर्भर होती है।

सभ्यता और संस्कृति में अंतर

क्रम	सभ्यता	संस्कृति
1.	यह एक वस्तु है जो हमारे पास हैI	यह वह गुण है जो हम सभी में व्याप्त है।
2.	सभ्यता में उपयोगिता पर बल दिया जाता हैI	संस्कृति में मूल्यों पर बल दिया जाता है।
3.	सभ्यता के अंदर समस्त भौतिक पदार्थ आते हैंI	संस्कृति के अंदर कल्प एवं कौशल आते हैंI
4.	इसकी अवधि संकुचित होती हैI	यह सतत् रहने वाली हैI
5.	इसकी सामग्री नष्ट हो जाती है।	इसकी सामग्री निरंतर गतिशील है।
6.	इसका संबंध शारीरिक उपयोगिता से हैI	इसका संबंध आत्मा से है।
7.	हमारी संस्कृति वही है जिसका उपयोग हम कर सकते हैं अर्थात साधन।	हम जो हैं वही हमारी संस्कृति है।

संस्कृति एवं शिक्षा में संबंध (Relation between culture & civilization) :

किसी भी देश के शिक्षा उस देश के संस्कृति पर आधारित होती है। शिक्षा की सामग्री का निर्माण संस्कृति की सामग्री से ही होता है। बिना संस्कृति के शिक्षा का कोई भी महत्व नहीं होता है। समाज में संस्कृति के भी कारण शिक्षा में समाज की विशेषता होती है। प्रत्येक समाज अपने शिक्षा की व्यवस्था अपनी संस्कृति के अनुरूप करता है। संस्कृति के सहायता से ही शिक्षा अपने उद्देश्य निर्धारित करती है एवं उनकी पूर्ति के लिए स्वयं संस्कृति की सहायता लेती है।

संस्कृति एवं शिक्षा के संबंध को निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से समझा जा सकता है :

१. संस्कृति की निरंतरता में शिक्षा की भूमिका।

२. संस्कृति के हस्तांतरण में शिक्षा की भूमिका।

३. संस्कृति के परिवर्तन में शिक्षा की भूमिका।
४. व्यक्ति के संस्कृति विकास में शिक्षा की भूमिका।
५. व्यक्तित्व के विकास में सहयोग।
६. शिक्षा में संस्कृति का समावेश

सामाजिकपरिवर्तन(SOCIAL CHANGE) :

सामाजिक परिवर्तन दो शब्दों से मिलकर बना है। समाज और परिवर्तन समाज का अर्थ केवल व्यक्तियों का समूह नहीं है समूह में रहने वाले व्यक्तियों के आपस में जो संबंध है उन संबंधों के संगठित रूप को ही समाज कहते हैं। समाज सामाजिक संबंधों का जाल है। परिवर्तन का अर्थ है बदलाव अर्थात पहले की स्थिति में बदलाव अर्थात पहले की स्थिति और आज की स्थिति में आने वाला अंतर या बदलाव ही परिवर्तन है। इस प्रकार समाज की पहले की स्थिति और बाद की स्थिति में अंतर आ जाना ही सामाजिक परिवर्तन कहलाता है। सामाजिक संगठन, सामाजिक ढांचे, सामाजिक संबंधों, समाज के रहन-सहन, व ढंग, रीति-रिवाजों, मूल्यों एवं विश्वासों इत्यादि में जो अंतर आ जाता है वह सामाजिक परिवर्तन कहलाता है।
किलपैट्रिक के अनुसार ***" किलपैट्रिक का विचार है कि सामाजिक परिवर्तन पूर्ण या आंशिक अच्छी या खराब किसी भी दिशा में हो सकता है। उनके मतानुसार परिवर्तन विचाराधीन बात का पूर्ण या आंशिक परिवर्तन है। इसका अभिप्राय यह नहीं है कि परिवर्तन अच्छी बात के लिए है या बुरी बात के लिए"***
मैकाइवर व पेज के अनुसार : ***" सामाजिक परिवर्तन एक ऐसी प्रक्रिया है जिस पर विविध प्रकार के परिवर्तनों का प्रभाव पड़ता है जैसे – मानव निर्मित रहन-सहन की दशा में परिवर्तन, मनुष्य के दृष्टिकोण में परिवर्तन तथा ऐसे परिवर्तन जो मनुष्य के नियंत्रण के परे हैं अर्थात जो वस्तुओं की जैविक तथा भौतिक प्रकृति द्वारा किए जाते हैं"***
वी० कप्पू स्वामी के अनुसार : ***" सामाजिक परिवर्तन सामाजिक संरचना तथा सामाजिक व्यवहार में परिवर्तन है।"***

सामाजिक परिवर्तन के कारण (Cause Of Social Change):
मैक्स वेबर (Max Weber) के शब्दों में ***" सामाजिक परिवर्तन का कारण संस्कृति है"***
उन्होंने विभिन्न धर्मों तथा आर्थिक व्यवस्थाओं की तुलना करके सिद्ध करने का प्रयास किया है कि संस्कृति में परिवर्तन होने के कारण समाज में परिवर्तन होते हैं। सामाजिक परिवर्तन मात्र सांस्कृतिक परिवर्तन के कारण नहीं होते वरन भौतिक राजनीतिक वैज्ञानिक और प्रौद्योगिकी कारणों से भी होते हैं।
कुछ और भी कारण है जो निम्नवत है :

1. प्राकृतिक कारण या भौतिक कारण(Natural factors and physical factors)
2. जैवीकीय कारण (Biological Factors)
3. जन संख्यात्मक कारण (Demographic Factors)
4. प्रौद्योगिकी कारण (Technological Factors)
5. सांस्कृतिक कारण (Cultural Factors)
6. आर्थिक कारण (Economical Factors)
7. मनोवैज्ञानिक कारण (Psychological Factors)

शिक्षा व सामाजिक परिवर्तन में संबंध(Realtionship Between Education and Social Change):
शिक्षा तथा समाज का घनिष्ठ संबंध है। शिक्षा समाज का एक महत्वपूर्ण साधन है। सामाजिक परिवर्तनों के अनेक कारणों में से ही शिक्षा एक महत्वपूर्ण कारक है। शिक्षा अनुभवों की पुनर्रचना करके लोगों के अभिवृत्तिओं में परिवर्तन लाती है। अभिवृत्तिओं में परिवर्तन से व्यवहार में परिवर्तन आता है। व्यवहार परिवर्तन से सामाजिक संबंधों में परिवर्तन आता है। सामाजिक संबंधों का परिवर्तन ही सामाजिक परिवर्तन है। इस तरह से शिक्षा सामाजिक परिवर्तन के प्रमुख अभिकर्ता के रूप में सामने आती है। शिक्षा तथा सामाजिक परिवर्तन के संबंधों को निम्नांकित रूप से देखा जा सकता है:
(१). शिक्षा सामाजिक परिवर्तन की स्थिति तथा साधन (Education as a Condition and Instruction of Social Change) :
यह कहा जाता है कि शिक्षा के अभाव में सामाजिक परिवर्तन नहीं हो सकता। इसका अभिप्राय है कि सामाजिक परिवर्तन लाने से पूर्व शिक्षा की व्यवस्था की जाए। समाज में बहुत से परिवर्तन या सुधार लाने के लिए कार्य किया जाता है परंतु शिक्षा के अभाव के कारण सुधार या परिवर्तन व्यवहारिकता पूर्ण सफल नहीं हो पाते। अत: शिक्षा द्वारा इस खाई को पाटकर सामाजिक परिवर्तनों को गति प्रदान की जाती है। शिक्षा के द्वारा व्यक्तियों के विचार अभिवृत्तिओं तथा मूल्यों में परिवर्तन लाया जा सकता है। इस दृष्टि से शिक्षा सामाजिक परिवर्तन का महत्वपूर्ण अभिकरण बन जाती है। शिक्षा आयोग के शब्दों में शिक्षा समाजिक क्रांति की वाहक है।
(२). शिक्षा सामाजिक परिवर्तनों का परिणाम है (Education as a result Of Social Changes) : यदि शिक्षा सामाजिक परिवर्तन का परिणाम है तो इसका अभिप्राय यह है कि सामाजिक परिवर्तन में शिक्षा के लिए मांग प्रस्तुत या उत्पन्न कर दी है। अतः इस दृष्टिसे शिक्षा सामाजिक परिवर्तनों के अनुरूप व्यवस्थित की जाएगी।

(३). <u>विज्ञान तथा तकनीकी विकास का शिक्षा पर प्रभाव (The impact of Science and Technology on Education):</u>
विज्ञान तथा तकनीकी का शिक्षा पर अत्यधिक प्रभाव पड़ता है और शिक्षा के कारण सामाजिक परिवर्तन में भी प्रभाव देखा जा सकता है।

<u>सामाजिक गतिशीलता (Social Mobility)</u>
सामाजिक गतिशीलता का संबंध मनुष्य की परिस्थिति में होने वाले परिवर्तन से है।
'स्थिति' सामाजिक प्रतिष्ठा का मापदंड है। प्रत्येक व्यक्ति एवं प्रत्येक समूह अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए अपनी सामाजिक स्थिति को ऊंचा करने का प्रयत्न करता है। इस स्थिति को ऊंचा करना व्यक्ति की गतिशीलता है। किंतु व्यक्ति की इच्छा सदैवपूर्ण नहीं होती। उसकी स्थिति उठाने गिराने में अनेक वाह्य कारकों का भी योगदान रहता है। इन कारणों के प्रभाव से व्यक्ति की स्थिति उठने के बजाय गिर भी सकती है। सामाजिक जीवन में उतार-चढ़ाव आते रहते हैं। इसके अतिरिक्त समाज कुछ ऐसे समूहों में विभाजित रहता है जो एक-दूसरे के समान सामाजिक स्थिति रखते हैं या समान समझे जाते हैं। व्यवसाय बदलने से यह जीवन की एक क्षेत्र से दूसरे में क्रियाशील हो जाने से भी मनुष्य के सामाजिक स्थान बदल जाते हैं। इस प्रकार अपनी वर्तमान सामाजिक स्थिति से दूसरी स्थिति में पहुंच जाना ही स्थिति गतिशीलता है चाहे परिवर्तन की स्थिति ऊंची हो या नीची अथवा सामान। प्रत्येक समाज में अपनी भूमिकाओं और सामाजिक मूल्यांकन के आधार पर समाज के सदस्य ऊंची-नीची स्थितियों में विभाजित हो जाते हैं।
<u>सामाजिक गतिशीलता का अर्थ (Meaning Of Social Mobility):</u>
सामाजिक गतिशीलता का अर्थ है व्यक्ति की किसी सामाजिक ढांचे में गति। इस गति से सामाजिक गतिशीलता का अर्थ है किसी सामाजिक ढांचे में किसी व्यक्ति के सामाजिक पद या सामाजिक स्थान में होने वाला परिवर्तन। अत: व्यक्ति की सामाजिक स्थिति या पद का ऊंचा अथवा निम्न हो जाना ही सामाजिक गतिशीलता है।

<u>सामाजिक गतिशीलता की परिभाषा (Definition of Social Mobility):</u>

मिलर व बूक के अनुसार : ***" सामाजिक गतिशीलता व्यक्तियों या समूह का एक सामाजिक संस्तरण से दूसरे सामाजिक संस्तरण में संचालन है।"***

सोरोकिम के अनुसार : ***" सामाजिक गतिशीलता का अर्थ सामाजिक समूहों तथा स्तरो में किसी व्यक्ति का एक सामाजिक स्थिति से दूसरी सामाजिक स्थिति में पहुंच जाना है।"***

<u>सामाजिक गतिशीलता के प्रकार (Types Of Social Mobility) :</u>
हेरोल्ड एल० हॉडकिंसन (Harold L. Hodgkinson) के अनुसार सामाजिक गतिशीलता के निम्नलिखित दो भेद होते हैं :
१. समतल सामाजिक गतिशीलता(Horizontal Social Mobility)
२. लंबवत सामाजिक गतिशीलता (Vertical Social Mobility)

१. <u>समतल सामाजिक गतिशीलता(Horizontal Social Mobility):</u>
हेरोल्ड एल० हॉडकिंसन के अनुसार ***" सामाजिक गतिशीलता में भौगोलिक गति होती है। इस प्रकार की सामाजिक गतिशीलता में व्यक्ति के सामाजिक परिस्थिति में कोई परिवर्तन नहीं होता है।"***
उदाहरण : किसी छोटे शहर के बैंक का मैनेजर जब बड़े शहर के बैंक का मैनेजर बन जाता है। तब उसके व्यवसाय में परिवर्तन ना होकर केवल भौगोलिक स्थिति में परिवर्तन होता है। अर्थात उसी व्यवसाय में कार्यरत होते हुए मात्र स्थान में परिवर्तन के कारण उसकी स्थिति में उतार-चढ़ाव आ जाता है।
सोरोकिम ने समतल सामाजिक गतिशीलता के कुछ प्रकार बताए हैं जो निम्नलिखित हैं :
१. धार्मिक गतिशीलता
२. व्यवसायिक गतिशीलता
३. क्षेत्रीय गतिशीलता
४. दलगट गतिशीलता
५. परिवार गतिशीलता
६. अंतरराष्ट्रीय गतिशीलता

२. <u>लंबवत सामाजिक गतिशीलता (Vertical Social Mobility):</u> उदग्र गतिशीलता का अभिप्राय स्थितियों के उतार-चढ़ाव या श्रेणी क्रम से है। जब एक व्यक्ति अपनी वर्तमान सामाजिक स्थिति से ऊंची या नीची स्थिति में चला जाता है तो इसे उदग्र गतिशीलता

कहा जाता है।
उदग्र गतिशीलता की परिभाषा देते हुए ***सोरोकिम*** कहते हैं ***"उदग्र गतिशीलता से मेरा अभिप्राय किसी व्यक्ति अथवा सामाजिक वस्तु के एक सामाजिक स्तर से दूसरे में परिवर्तन होने में उत्पन्न होने वाले संबंधों से है।"***

उदग्र गतिशीलता के निम्नलिखित दो प्रकार होते हैं :

१. <u>आरोही गतिशीलता (Ascending Mobility):</u>

आरोही गतिशीलता वह है जब कोई व्यक्ति नीचे स्थिति वाले समूह को छोड़कर ऊंची स्थिति वाले समूह में प्रवेश करता है। आरोही गतिशीलता सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि करती है।

२. <u>अवरोही गतिशीलता(Descending Mobility):</u>

अवरोही गतिशीलता आरोही गतिशीलता के विपरीत है। जब व्यक्ति का परिवर्तन उच्च स्थिति से निम्न स्थिति की ओर होता है तो यह अवरोही गतिशीलता कहलाती है।
उदाहरण: धनी से निर्धन हो जाना।